HELP

हेल्प यू बाल गोपाल शिक्षा योजना*

हेल्प यू एजुकेशनल एवं चैरिटेबल ट्रस्ट : हेल्प यू ट्रस्ट की स्थापना 28 अप्रैल 2012 को लखनऊ में श्री हर्षवर्धन अग्रवाल द्वारा लोक कल्याण के दृष्टिकोण से, विशेषकर निर्धन एवं निराश्रित वर्ग के उत्थान के लिए की गई है। हेल्प यू ट्रस्ट का लक्ष्य समाज में, विशेषकर दुर्बल वर्ग में सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक विकास के माध्यम से गुणात्मक परिवर्तन लाना है। ट्रस्ट एक गैर लाभकारी व्यावसायिक संस्था है, जिसका उद्देश्य शिक्षा, अध्ययन, शोध, चिकित्सा एवं मानवता की सेवा के माध्यम से जन-कल्याण करना एवं सामाजिक बुराइयों को बिना किसी भेदभाव के समाप्त करना है।

हेल्प यू बाल गोपाल शिक्षा योजना के उद्देश्य : बच्चे देश का भविष्य होते हैं और देश की प्रगति में एक अहम भूमिका निभाते हैं। अगर बच्चों को सही दिशा व संस्कार मिले तो वे सिर्फ अपने माँ-बाप का नाम ही रोशन नही करते अपितु अपने देश का नाम भी ऊंचाइयों पर ले कर जाते हैं। यह एक कड़ुवा सत्य है कि भारत मे 50प्रतिशत से अधिक परिवार गरीबी रेखा पर जीवन व्यतीत कर रहें हैं। धन के अभाव में उनके बच्चें भरपेट खाना ही नही खा पाते, शिक्षा प्राप्त करना तो उनके लिए दूर की बात है। शिक्षा के अभाव में न सिर्फ ये बच्चे बाल मजदूरी करने पर विवश हो जाते हैं बल्कि बुरी आदतों का शिकार भी हो जाते हैं।

इन्ही बच्चों के भविष्य निर्माण हेतु हेल्प यू एजुकेशनल एवं चैरिटेबल ट्रस्ट ने 'पदमभूषण (डा0) कवि श्री गोपाल दास 'नीरज' जी'' के 91वें जन्मदिवस के अवसर पर ''हेल्प यू बाल गोपाल शिक्षा योजना'' शुरू की है जिसमें गरीब 91 बच्चों को 12वीं तक की शिक्षा, किताबें, यूनीफार्म व साइकिल निःशुल्क प्रदान की जायेगी। यह योजना 1 वर्ष में पूरी की जायेगी।

योजना का क्रियान्वन :

हेल्प यू बाल गोपाल शिक्षा योजना में हम ऐसे 91 बच्चों को चयनित करेंगे जो पढ़ना चाहते हैं परन्तु धन के अभाव में पढ़ने में असमर्थ हैं। हेल्प यू एजुकेशनल एवं चैरिटेबल ट्रस्ट ऐसे बच्चों की मदद करेगा जिन्होंने किसी अच्छे स्कूल में एडमिशन लेने की चयन प्रक्रिया तो पूरी कर ली है पर उनके माँ-बाप पैसों की कमी की वजह से उन्हें पढ़ा नही पा रहे हैं। इस योजना के अन्तर्गत ऐसे ही 91 बच्चों की खोज की जायेगी व समाज के लोगों की मदद से उनके पढ़ने के सपने को पूरा किया जायेगा। एक बच्चे की 12वीं तक शिक्षा का पूर्ण व्यय अनुमानित 5,00,000/-(पांच लाख रूपये) है।

योजना को प्रारम्भ करने का प्रावधान : ''हेल्प यू बाल गोपाल शिक्षा योजना'' 4 जनवरी 2015 से शुरू हो चुकी है जिसमें वह लोग/व्यक्ति जो बच्चों की शिक्षा का खर्च वहन करना चाहते हैं उन्हें एक फार्म भरना होगा जिसमें उन्हें अपनी सारी जानकारी जैसे नाम, पता, फोन नं0, व्यवसाय इत्यादि उपलब्ध कराना होगा तथा उस बच्चे के माता-पिता को भी एक फार्म भरना होगा जिसमें बच्चे से संबंधित जानकारी जैसे उसका नाम, माता-पिता का नाम, पता, फोन नं0 आदि जानकारी उपलब्ध करानी होगी। हेल्प यू ट्रस्ट फार्म का परीक्षण/प्रमाणित करवाने के बाद ही बच्चे की पढ़ाई के खर्च की जिम्मेदारी किसी को देगा तथा आपसी सहमति से बच्चे की शिक्षा का खर्च उठाया जायेगा।

हेल्प यू ट्रस्ट 6 महीने में एक बार बच्चे व उसके माँ-बाप को उस व्यक्ति से मिलवायेगा जो उस बच्चें की पढ़ाई का खर्च उठा रहा है जिससे दोनों लोगों को एक दूसरे के बारे में जानकारी मिलती रहे। हेल्प यू ट्रस्ट के कार्यकर्ता निरन्तर बच्चे की प्रगति रिपोर्ट पर अपना ध्यान रखेंगे। आप निम्नलिखित तरीके से हमारी मदद कर सकते हैः

1. एक बच्चे की 12वीं तक फीस का खर्च रू.:3,60,000/-**
2. बच्चे की यूनीफार्म का खर्च रू. : 45,000/-**
3. बच्चे की किताबों का खर्च रू.: 90,000/-**
4. बच्चे की साइकिल का खर्च रू. : 5,000/-**

हेल्प यू एजुकेशनल एवं चैरिटेबल ट्रस्ट सभी देशवासियों से यह अपील करता है कि समाज के उत्थान की इस मुहिम में अपनी भागीदार बनें ताकि यह योजना मात्र 91 बच्चों तक सीमित न रहकर प्रदेश व देश में सुचारू रूप चलायी जा सके। याद रखें कि आप किसी बच्चे का भविष्य बनाकर राष्ट्र निर्माण में अपना अतुलनीय योगदान दे सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये नीचे लिखे नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं।

* नियम व शर्तें लागू। ** वर्तमान अनुमानित व्यय।

हमारा पता :

हेल्प यू एजुकेशनल एवं चैरिटेबल ट्रस्ट
25/2जी, सेक्टर-25, इन्दिरानगर,
लखनऊ-226016(उत्तर प्रदेश)भारत
दूरभाष : 0522-2715812,13,14,15
फैक्स नं0 : 0522-2715816
मो0/ : 9415020720,
9452820720, 9532820720
Email : helpu.ngo@gmail.com
: helpu.mt@gmail.com

Follow us on : facebook.com/HelpU.Trust twitter.com/HelpU_Trust youtube.com/user/HelpUTrust

प्रकाशक : ऐश्वर्या सिन्हा द्वारा फ्लैट नम्बर 88, सी-ब्लाक, लेखराज नगीना, चर्च रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 से प्रकाशित
मुद्रक : एक्सपेक्ट बिजनेस वर्ल्ड, 205-206, प्राइम पैलेस, फैजाबाद रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016, फोन : +91 9452293515

रेवान्त

साहित्य और संस्कृति की त्रैमासिक

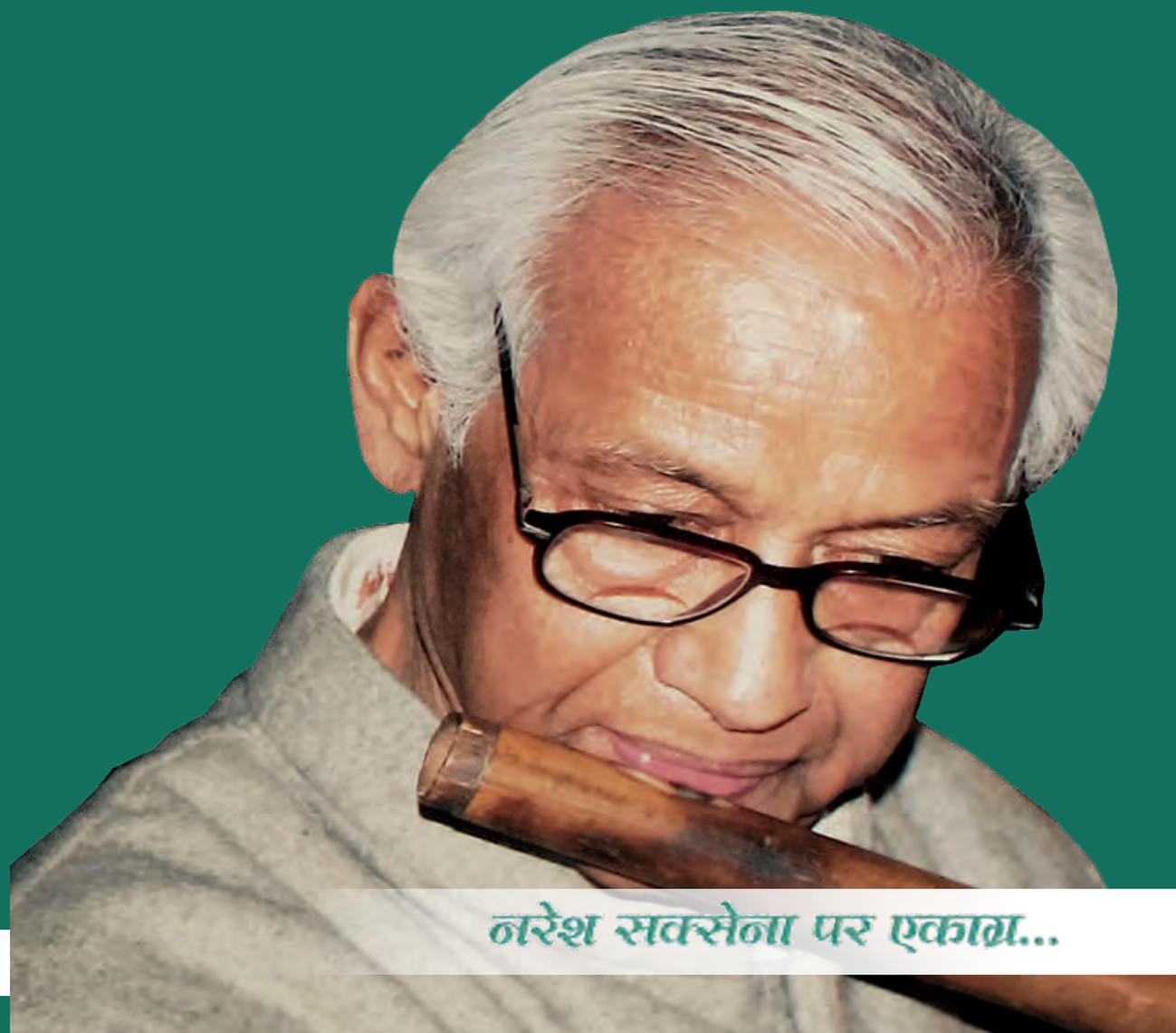

नरेश सक्सेना पर एकाग्र...

रेवान्त

साहित्य व संस्कृति की त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 13-16
जनवरी-दिसम्बर : 2014

प्रकाशक
ऐश्वर्या सिन्हा

संरक्षक
डा. रूपल अग्रवाल
मैनेजिंग ट्रस्टी, हेल्प यू ट्रस्ट

प्रधान संपादक
कौशल किशोर

संपादक
डॉ. अनीता श्रीवास्तव

उप संपादक
विमल किशोर, कुसुम वर्मा, रत्ना श्रीवास्तव
भावना मौर्य श्रीवास्तव, आभा खरे

सलाहकार
प्रो. उषा सिन्हा
डा. निर्मला सिंह, संध्या सिंह

प्रबन्ध सहयोग
इन्दु सिन्हा, साज़िदा सबा, रोली श्रीवास्तव

संपादकीय कार्यालय
फ्लैट नं. 88, सी-ब्लाक, लेखराज नगीना,
चर्च रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016
मोबाइल : 9839356438, 9621691915, 9807519227
Email : anitasrivastava249@gmail.com
kaushalsil.2008@gmail.com

मूल्य : 50 रुपया
वार्षिक सदस्यता : 200 रुपये, पांच वर्ष : 800 रुपये
आजीवन सदस्यता : 3000 रुपये

संस्थाओं के लिए सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 250 रुपये, पांच वर्ष : 1000 रुपये
आजीवन : 4000 रुपये

(मनीआर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट द्वारा समस्त भुगतान 'रेवान्त पत्रिका' के नाम से लिये जायेंगे)।

प्रकाशित रचनाओं के विचार से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

इस बार ... *नरेश सक्सेना पर एकाग्र*

संपादकीय/नरेश सक्सेना में एक विशेष धातु की गूंज है...	2
तुम में कहीं कुछ है/नामवर सिंह	6
नरेश सक्सेना की कविताएं	8
नरेश सक्सेना से ओम निश्चल की बातचीत	11
नरेश सक्सेना से वन्दना मिश्र की बातचीत	15
एक छलकती हुई तरलता/विनोद कुमार शुक्ल	18
कविता के निर्भय प्रदेश में नरेश/उर्मिल कुमार थपलियाल	20
ओ मेरे कवि/भगवान स्वरूप कटियार	21
पारदर्शी/नरेन्द्र जैन की कविता	22
नरेश सक्सेना की कविता अजीवित भी जीवित है/मंगलेश डबराल	23
मुझे मेरे भीतर छुपी रोशनी दिखाओ/राजेश जोशी	25
एक वृक्ष बचा रहे संसार में/विष्णु खरे	28
नरेश सक्सेना का काव्य वैशिष्ट्य/विश्वनाथ त्रिपाठी	30
सृजन से निर्माण तक/विजय बहादुर सिंह	35
चम्बल किसी लड़की का नाम नहीं.../पुरुषोत्तम अग्रवाल	38
मेरे कवि की कविता में मर्म/लीलाधर मंडलोई	41
'कथाक्रम' के साथ नरेश सक्सेना/शैलेन्द्र सागर	42
जीवन में धंसने की कविता/विष्णु नागर	43
काजी अब्दुल सत्तार एवं अरविन्द कुमार की टिप्पणियां	45
क्या मुसीबत में कविताएं होंगी हमारे साथ/चन्द्रेश्वर	46
दूसरों के खिलने के लिए जगह बनाती कविताएं/हरीशचन्द्र पाण्डे	49
अरथ अमित अरु आखर थोरे/पंकज पराशर	52
'गिरना' कविता में जीवन दर्शन/उमेश चौहान	55
बांसुरी की तरह बजती कविताएं/सुभाष राय	60
नरेश सक्सेना : एक शख़्सियत/देवकीनन्दन शान्त	62
लय के समुद्र का नाविक/दिनेश कुमार शुक्ल	63
लौकिकता की अभ्यर्थना में/कात्यायनी	65
गिरने के निहितार्थ/स्वप्निल श्रीवास्तव	69
कविताओं की गुनगुनाती पतली नदी/वैभव सिंह	72
गहराइयों का शब्द-शिल्प/डॉ अनिल मिश्र	76
विपदा की नदी से पार ले जाती कविताएं/दयानन्द पाण्डेय	79
सुनो चारुशिला : जैसे कविता को लय मिल गई/नलिन रंजन सिंह	84
बांसुरी/साख्ल बागला	90
गहन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति/ऊषा सिन्हा	91
कंक्रीट पर बसन्त/संध्या सिंह	93
नरेश सक्सेना : एक वैज्ञानिक कवि की केन्द्रीय संवेदना : अग्निशेखर	94

नरेश सक्सेना में एक विशेष धातु की गूंज है...

नरेश सक्सेना ऐसे रचनाकार हैं जिनकी हमारी सांस्कृतिक दुनिया में विशिष्ट उपस्थिति है। वे हमारे दौर के महत्वपूर्ण और बहुपठनीय कवि हैं। इसके साथ ही, उन्होंने विभिन्न कला विधाओं जैसे नाटक, फिल्म, संगीत, संपादन आदि के क्षेत्र में भी योगदान किया है। उन्होंने गीत भी लिखे हैं। उन्हें साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र के कई विशिष्ट सम्मानों से सम्मानित किया गया है। अपनी रचनाओं से जहां वे पाठकों के संवेदनात्मक तंतुओं को गहरे प्रभावित करते हैं, वहीं जब वे बांसुरी या माउथ आर्गन बजाते हैं तो श्रोता झंकृत हुए बिना नहीं रह पाता। कवि दिनेश कुमार शुक्ल उन्हें 'लय का नायिक' कहते हैं। विनोद कुमार शुक्ल उनकी कविता में 'एक छलकती हुई तरलता' पाते हैं। मंगलेश डबराल के अनुसार उनकी कविता में 'अजीवित भी जीवित है'। इसी तरह की खूबियों का दर्शन कवियों, आलोचकों व पाठकों को नरेश सक्सेना की रचनाओं में होता है।

उनके व्यक्तित्व की यह खासियत है कि उन्होंने अपने नाम को हमेशा पीछे रखा। उनका सारा जोर अपने काम पर रहा। इसी वजह से उनके काव्य संग्रह के आने में देरी हुई। उनका पहला संग्रह 'समुद्र पर हो रही बारिश' भी साठ की उम्र पार करने पर आया। उनका दूसरा संग्रह 'सुनो चारुशीला' भी हाल में प्रकाशित हुआ है। 'आरम्भ' साठ के दशक की महत्वपूर्ण पत्रिका थी। इस पत्रिका की योजना नरेश सक्सेना ने कवि विनोद कुमार शुक्ल और कथाकार ज्ञानरंजन के साथ मिलकर बनाई थी। इसकी परिकल्पना उन्हीं की थी। वैसे पत्रिका के संपादक विनोद भारद्वाज थे। लेकिन पत्रिका के संपादन-संयोजन की महती जिम्मेदारी का निर्वहन नरेश जी ने किया। इस पत्रिका ने नये रचनाकारों को सामने लाने का काम किया जो बाद में साहित्य के क्षेत्र में चर्चित हुए। धूमिल की मशहूर कविता 'मोचीराम' 'आरम्भ' में ही छपी थी।

नरेश सक्सेना का जीवन लोकतांत्रिक संस्कृति का अप्रतिम उदाहरण है। उन्होंने जो अपना परिवार बनाया है, उसमें पूर्वा, राघव, सोनी, राखी, ऋषि के साथ वे पेड़-पौधे, फल, प्रकृति, प्राकृतिक जीव और मित्रों व पाठकों का बड़ा समाज समाहित है। हां, आज यहां भले ही विजय नरेशजी की सदेह उपस्थिति न दिखे लेकिन 'एक तारे से अपना आकाश' बनाने की भावनात्मक कोशिश जरूर महसूस की जा सकती है। नरेश सक्सेना का विवाह विजय नरेश से हुआ था। यह विवाह हरिशंकर परसाई, विनोद कुमार शुक्ल, ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, मलयज, सोमदत्त, नम्रता प्रसाद खरे जैसे लेखकों और जबलपुर के मेयर भवानी प्रसाद तिवारी की उपस्थिति में एक सांस्कृतिक आयोजन था। विजय नरेश जी तवायफ की बेटी थीं तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए कला की ऊंचाई पर पहुंची थीं। इसके पीछे जहां विजय जी की अपनी प्रतिभा थी, वहीं नरेश सक्सेना जैसे जीवन साथी का अटूट साथ था। वे फिल्म इंस्टीच्यूट, पुणे से फिल्म निर्देशन में पहली महिला स्नातक थीं।

नरेश सक्सेना का तीन साल पहले विजय नरेशजी का साथ छूटा। इस सदमे से उबरना आसान नहीं था। लेकिन यह नरेश जी की आन्तरिक ताकत थी कि उन्होंने अपने शोक को शक्ति में बदला और दुख को समाज के साथ बांटा। इस दौरान की उनकी रचनात्मक सक्रियता किसी सांस्कृतिक विस्फोट से कम नहीं रही है। यह न सिर्फ रचना कर्म के धरातल पर बल्कि सामाजिक सरोकारों व सांस्कृतिक आंदोलनों में उनकी बढ़ती भूमिका में देखी जा सकती है। इसी बीच उन्होंने अपने जीवन के 75वें साल में प्रवेश किया। तभी उन पर केन्द्रित 'रेवान्त' का विशेष अंक निकालने का विचार आया। योजना बनी, जिम्मेदारियों का निर्धारण हुआ, समस्याएं भी आईं, अंक में देरी हुई, रचनाकारों व पाठकों को काफी इन्तजार करना पड़ा परन्तु हमें प्रसन्नता है कि आज जब नरेश सक्सेना ने अपने जीवन का 77वां साल पूरा किया है, हमारे विचार ने मूर्त रूप लिया है और उन पर केन्द्रित यह विशेष अंक हम पाठकों को सौंप रहे हैं।

नरेश सक्सेना की कविता के जो तत्व सर्वाधिक प्रभावित करते हैं, वे हैं वस्तु और रूप, इनकी एकता अर्थात कविता का कथ्य और काव्य कला। कविता की विधागत गुण सम्पन्नता नरेश सक्सेना की कविताओं में मिलती है। ये आकार मे छोटी हैं परन्तु अर्थ विस्तार में इनमें गहराई और व्यापकता है। कविताएं व्यक्तिगत होकर भी व्यक्तिपरक नहीं हैं। इनमें काव्य कला की उत्कृष्टता है, पर ये कलावादी नहीं हैं। यहां गहरी सामाजिकता है पर वह दिखावे की वस्तु नहीं है। ये राजनीतिक हैं पर इनमें स्थूल नारेबाजी व वैचारिक बड़बोलापन नहीं है। नरेश सक्सेना की कविताओं में जीवन, समय और समाज को देखने-समझने की गहरी मानवीय दृष्टि है जिसमें धैर्य, करुणा, बेचैनी और मार्मिकता है। 'दुनिया के करोड़ो करोड़ लोगों' से गहरे संवेदनात्मक लगाव और 'हम मनुष्य, हम/आधे चौथाई या उससे भी कम, लेकिन/पूरे होने की इच्छा से भरे हम मनुष्य' की ऐसी सरल व सहज कविताएं हैं जो पाठकों के मन-मस्तिष्क पर अपना असर छोड़ती हैं, उनके विचार व संवेदना को ज्यादा सघन करती हैं। नरेश जी ने जीवन जीने के क्रम में कविताएं लिखी हैं। वे विज्ञान के विद्यार्थी रहे हैं, पेशे से सिविल इंजीनियर। इस मायने में नरेश जी हिन्दी के अकेले या दुर्लभ कवि हैं जिन्होंने निर्जीव व जड़ सी लगने वाली वस्तुओं पर कविताएं लिखी हैं। इनमें अपनी कला चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौन्दर्य को अपनी कविता में सजीव बना देना, यह कला की बड़ी साधना है। नरेश सक्सेना इसी साधना के कवि हैं।

नरेश सक्सेना को पढ़ते हुए बरबस ब्रेख्त याद आते हैं। ब्रेख्त अपनी कविता में कहते हैं "क्या अंधेरे वक्त में भी गीत गाये जायेंगे?/हाँ, अँधेरे के बारे में भी/गीत गाये जायेंगे।" यहाँ सवाल भी है और उसका पुरजोर अंदाज में जवाब भी। ब्रेख्त का सारा जोर इस 'हाँ' पर हैं क्योंकि जब अंधेरे का साम्राज्य चारों तरफ फैला हो, गीत गाने तक की मनाही हो ऐसे वक्त में मात्र गीत गाना ही नहीं, उस अंधेरे के साम्राज्य को समझना व समझाना, गीत लिखना व उसे लोगों तक पहुँचाना ही रचनाकर्म की सार्थकता है। नरेश सक्सेना भी ब्रेख्त की तरह 'क्या कविताएं होंगी मुसीबत में हमारे साथ?' और आगे 'कौन सी कविताएं होंगी हमारे साथ?' जैसे सवाल करते हैं और स्वयं जवाब भी प्रस्तुत करते हैं 'कविता ऐसी जो बुरे वक्त में काम आये।' वे ऐसी प्रेम कविता की कामना करते हैं जो हिंसा और क्रूरता को समझ और संवेदना में बदल दे। वे कहते हैं 'घृणा और हिंसा से भरे इस समय में/पौधों को सींचते हुए/करता हूं कामना उस साहस की/जिसके साथ मिट्टी में कर सकूं प्रवेश/एक बीज की तरह।'

इन दिनों हिन्दी कविता के पचास साल पर चर्चा हो रही है। इस संदर्भ के कई लेख आये हैं। मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता 'अंधेरे मे' 1964 में प्रकाशित हुई थी। उसके भी पचास साल पूरे हुए हैं। देखा जाय तो हिन्दी कविता के पचास साल का मतलब है 'अंधेरे में' के बाद की कविता। इस विचार-विमर्श के दौरान एक प्रश्न उठा है कि क्या हिन्दी कविता 'अंधेरे में' के बाद उससे आगे गयी है या पीछे ? वैसे इस प्रश्न का उत्तर जड़ तरीके से नहीं ढूंढ़ा जा सकता क्योंकि बदलते समय के साथ कविता भी बदली है। फिर भी नरेश सक्सेना की कविता 'गिरना' इसका उत्तर हो सकती है। मुक्तिबोध के समय में 'अंधेरा' आशंका है या अधिक से अधिक वह संभावना है पर मुक्तिबोध 'अंधेरे में' जो देखते हैं, वह आज का सच है। नरेश सक्सेना की कविता 'गिरना' में उसका विस्तार है। यहां 'गिरना' के अनेक भाव हैं। स्वप्निल श्रीवास्तव के शब्दों में कहें तो 'अनेक छवियाँ' हैं। यह अपने मूल में उठने की कविता है और इस प्रक्रिया में यह अंधेरे का प्रतिरोध ही नहीं बल्कि मनुष्यता का बसन्त रचती है।

जहां मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' काल का अतिक्रमण करती है, वहीं नरेश सक्सेना की कविताएं हमारे दौर के पार जाती हैं। उनकी जड़े अतीत में हैं, वे वर्तमान से रू-ब-रू हैं और प्रकृति, जीवन और सजीव-निर्जीव से निर्मित संसार को बचाने और उसे सुन्दर व मानवीय बनाने के संघर्ष में शामिल होती हैं। नरेश सक्सेना का सांस्कृतिक व्यक्तित्व इसी प्रक्रिया में निर्मित हुआ है। इसमें एक विशेष धातु की गूंज है। नरेश सक्सेना की एक कविता है 'धातुएं'। अपनी इस कविता में वे कहते हैं 'ऐसा भी नहीं है/कि इससे पूरी तरह बेखबर हैं लोग/मुझसे तो कई बार पूछ चुके हैं मेरे दोस्त/कि यार नरेश/तुम किस धातु के बने हो'। 'रेवान्त' के इस अंक के माध्यम से हमारी कोशिश इसी 'धातु' की पड़ताल की है। बस; कोशिश, क्योंकि नरेश सक्सेना ऐसे रचनाकार हैं जिनका रचना संसार पाच दशकों से ज्यादा काल में तथा कला की कई विधाओं में फैला है, उसके विविध आयामों व पहलुओं पर विचार एक विशेषांक में संभव नहीं। फिर भी हमारी कोशिश रही है कि उनके व्यक्तित्व व कृतित्व का मूल्यांकन हो, उनके रचना संसार को सामने लाया जाय तथा उसे पाठकों तक पहुँचाया जाय ताकि साहित्य व समाज की नई पीढ़ी उथल-पुथल व संघर्ष भरे दौर से परिचित हो सके जिसकी उपज नरेश सक्सेना जैसे रचनाकार हैं। लेकिन जैसा कि नरेश जी का कवि उनके रचना कर्म पर हावी रहा है, इस विशेषांक की कहानी इससे बहुत भिन्न नहीं है। यहां भी उनका कवि रूप ही हावी है। अधिकांश आलेखों में उनकी कविता पर ही विचार हुआ है।

अंत में, अपने प्रिय रचनाकार नरेश सक्सेना के दीर्घायु होने और स्वस्थ जीवन की कामना के साथ यह अंक प्रस्तुत है। हमें लेखकों व पाठकों की प्रतिक्रिया का इन्तजार रहेगा। इस अंक के लिए रचनाकारों ने जो सहयोग दिया, पत्रिका प्रकाशन में विलम्ब के बावजूद धैर्य बनाये रखा, उसके लिए हम उनके आभारी हैं। हम उनके भी आभारी हैं जो रेवान्त से जुड़े हैं, कदम कदम पर साथ चलते हैं क्योंकि उनके साथ के बिना 'रेवान्त' का एक कदम भी आगे बढ़ना संभव नहीं। हमें इस बात का दुख है कि कुछ ऐसी रचनायें जो 'रेवान्त' के इस अंक के लिए भेजी गयी थीं, हम तक नहीं पहुंच पाईं और वे इस अंक में नहीं जा पा रही हैं। हम इसके लिए उन रचनाकारों के क्षमा प्रार्थी हैं। इस अंक के लिए उदय प्रकाश एवं प्रियदर्शन की रचनायें भी हमें प्राप्त हुई थीं। लेकिन उनकी सहमति न मिल पाने से वे नहीं जा पा रही हैं।

❑